फ्राँस से गवाही

एआईएन विभाग फ्राँस में इराकी शरणार्थियों के साथ सीखने का अवसर

दाएश (आईएसआईएस) के बढ़ते हुए कदमों के कारण निर्मित परिस्थितियों से विचलित हो कर 2014 के अन्त में, बेलग्रेड के छोटे से शहर में रहने वाले तीन मसीही समुदाय के 20 सदस्यों ने यह निर्णय लिया कि वे इराकी शरणार्थियों के एक परिवार को अपने बीच में स्थान देंगे। नौ महिनों की प्रतीक्षा के बाद, एक शनिवार की शाम रेल्वे–स्टेशन में यह घोषणा की गई कि दो दादियों/नानियों, दो माता पिताओं और तीन बेटों का एक मिखो परिवार आया है।

मीडिया इसे अधिक सकारात्मक बना कर प्रस्तुत करना चाहता था ताकि यूरोप में भय का वातावरण निर्मित न हो। इसलिए एक फोटोग्राफर और पत्रकार ने इस परिवार के आगमन का एक आँखों देखा ब्यौरा तैयार किया। उन दिनों में मीडिया लगातार इस परिवार के विषय में समाचार जोर शोर से प्रसारित करता रहा और ऐसा अनेक हफ्तों तक चलता रहा, तथा हमारे सरल व साधारण परिवारों द्वारा की गई तैयारी इसके सामने फीकी/बेढंगी प्रतीत होने लगी।

एक महीने में परिवार को न्यूनतम आय और घर का भत्ता मिलने लगा। नौ महिनों के बाद, यह परिवार यहाँ इतना घुलमिल गया कि अब अरबी–फ्रेंच अनुवादकों की आवश्यकता नहीं रह गई; तथा दोनों दम्पत्तियों को नौकरी मिल गई। हमारे मसीही समुदाय उनके लिए एक नया परिवार बन गया, जिसने उनके मूल गृहस्थान (उनके देश) में रह रहे उनके सम्बन्धियों का स्थान ले लिया।

रिगनबर्ग, जर्मनी में आराधना के बाद प्रीतिभोज

फोटो: लिसा अंगर

दूसरों के द्वारा हमारे समूह में लाया जाने वाला निपुणता व कौशल का धन सुझाव देने तथा परिवार के अपनेपन का अहसास कराने में मूल्यवान सिद्ध हुआ। परिवार को शरणार्थियों को दर्जा दिलाने, उनके निवास–प्रमाण पत्र बनवाने, उनके लिए चिकित्सा सम्बन्धी कागजात (मेडिकल पेपर्स) तैयार करने इत्यादि में हमारा समूह उनकी सहायता करने उनके साथ साथ गया। हमने माता–पिता की सहायता शिक्षा, बच्चों की गतिविधियों, और नौकरी पाने में भी किया।

कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट, एडवेन्टिस्ट तथा मेनोनाइट लोग मिलकर यह कार्य करते हुए एक दूसरे को बेहतर रीति से जानने लगे और एक दूसरे की सराहना करना भी सीखा। हम अक्सर स्वयं को सीखने वालों के रूप में पाते हैं। जब मैंने कुछ अरबी मुहावरों का प्रयोग करने का प्रयास किया, तब मैं यह समझ सका कि उन्हें जिस विपरीत दिशा में चलते हुए हम तक पहुँचना है वह कितना कठिन है। हम यह प्रयास करते हैं कि जितना हो सके अपने गीतों व बाइबल पठन में फ्रेंच व अरबी दोनों भाषाओं को अधिक से अधिक स्थान दें। हम उनके साथ अपने मसीही विश्वास की समझ को बाँट कर अत्यंत प्रसन्न होते हैं।

दोनों दादियाँ/नानियाँ अपना अधिकांश समय रंगीन तस्वीरों की कसीदाकारी करते हुए व्यतीत करती है, जिनमें वे बाइबल के धार्मिक दृश्यों को उकेरती हैं। इस प्रकार से हमने एक प्राचीन संस्कृति को पहिचाना और सीखा: हमारे यह इरानी मित्र नीनवें प्रान्त से आए हैं।

उनका मसीही इतिहास काफी प्रभावित करने वाला है। रोमी काल में, वे पूर्व (फारस का गूढ़ धर्म) और पश्चिम (रोम, बायज़ानटाइन रूढ़िवाद, इस्लाम, और यहाँ तक कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट मिशनरी भी) के प्रभाव से संघर्ष करते आए हैं। 20वी शताब्दी में अमरीकी सेना के हस्तक्षेप ने तो उनके जीवन जीने के तरीकों को बदल कर रख डाला, इसके कारण अन्य क्षेत्रवादी प्रतिक्रियाएं उत्पन्न हो गईं, जिनके विकराल परिणामों को वर्तमान में हम देख रहे हैं।

हम अपने इन मित्रों के साथ एक यात्रा पर है; भाषा, इतिहास और संस्कृति की एक यात्रा। यह बात सिर्फ स्वागत व पहुनाई तक ही सीमित नहीं है, परन्तु मानवता की भावना में ऐसे भाइयों और बहनों के रूप में मिलकर रहना भी है जो सीमाओं को पार कर एक साथ आते हैं।

डेनियल गोल्डस्मिथ, इग्लिसे इव्हेंजलिक्यू मेनोनाइट (इव्हेंजलिकल मेनोनाइट चर्च) सेन्ट जेनिस पॉइली, फ्राँस के सदस्य द्वारा लिखित।

यह गवाही 2017 के विश्व सहभागिता रविवार की आराधना हेतु तैयार सहायक सामग्री का एक हिस्सा है। विश्व सहभागिता रविवार के विषय में अधिक जानकारी के लिए यहाँ क्लिक करें http://www.mwc-cmm.org/worldfellowshipsunday